अव्ययीभाव contd.

916. तद्धिताः – 4/1/76

यह अधिकार सूत्र है। इसका क्षेत्र 'निष्प्रवाणिश्च' (5/4/160) तक है, जो यह स्पष्ट करता है कि यह तक आनेवाले प्रत्यय तद्धित के होंगे और 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से ही इनकी प्रातिपदिकसंज्ञा होगी।

917. अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः – 5/4/107

यह विधि सूत्र है। इसका अर्थ है कि अव्ययीभाव समास में शरद आदि शब्दों से 'टच्' प्रत्यय (अ) होता है।

यथा – उपशरदम् – लौ० वि० – शरदः समीपम्, अ० वि०

शरद + ङस् + उप।

अव्ययं विभक्ति समीप... सूत्र से समीप अर्थ में उप अव्यय के साथ शरद पद का समास हुआ। 'कृत्त..' से प्राति० संज्ञा, 'सुपो..' से विभक्ति का लोप, 'प्रथमा निर्दिष्ट...' से उपसर्जन संज्ञा, 'उपसर्जनं...' से पूर्व निपात। 'अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः' सूत्र से 'टच्' प्रत्यय हुआ और 'अ' बचा उप+शरद् +अ = उपशरद रूप हुआ, पुनः प्रातिपदिक संज्ञा, सु आदि कार्य होकर 'अमि पूर्वः' से अम् आदेश होने पर 'उपशरदम्' रूप सिद्ध हुआ।

(b) प्रतिविपाशम् – लौ० वि० – विपाशः अभिमुखम्, अ० वि० –

विपाश + ङस् प्रति।

'लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये' सूत्रानुसार सन्मुख अर्थ में प्रति अव्यय का विपाश पद के साथ समास हुआ।

(शेष उपशरदम् की तरह)

(c) उपजरसम् – लौ० वि० – जरायाः समीपम्, अ० वि० –

जरा + ङस् + उप।

Same as 'उपशरदम्'

('जराया जरस् च' सूत्रानुसार 'जरा' का 'जरस्' आदेश हुआ।)

918 – अनश्च – 5/4/108

यह विधि सूत्र है। सूत्र का अर्थ है जिस पद के अन्त में 'अन्' हो उस अव्ययीभाव समास में टच् (अ) प्रत्यय होता है।

Scanned with CamScanner

यथा - उपराजन् - लौ० वि - राज्ञः समीपम्, अ० वि० - राजन् + ङस् + उप। Same as 'उपशरदम्' ('अनश्च' से 'राजन्' के अन् का लोप)

919. नस्तद्धिते — 6/4/144.
यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ है - यदि नकारान्त 'भ' संज्ञक पद के परे (बाद में) तद्धित प्रत्यय हो तो उसके 'टि' (अलोऽन्त्यात् टि) का लोप हो जाता है। यथा - उपराजम् , जहाँ 'टि' लोप होता है वहाँ उपराज + स्वादि कार्य होकर 'उपराजम्' रूप सिद्ध होता है।

(b) अध्यात्मम् - लौ० वि - आत्मनि + अधि, अ० वि० - आत्मन् + ङि० + अधि। Same as उपराजम्।

920. नपुंसकादन्यतरस्याम् — 5/4/109.
यह विधिसूत्र है। यह वैकल्पिक सूत्र है। अव्ययीभाव समास में नपुंसक लिंग शब्दों से होनेवाला 'टच्' प्रत्यय विकल्प से होता है। यथा - उपचर्मम् और उपचर्मन्
अ० वि० - चर्मन् + ङस् + उप।
लौ० वि - चर्मणः समीपम्।
Same as उपशरदम्। जहाँ विकल्प से 'उपचर्मन्' होगा, वहाँ इस शब्द के अदन्त नहीं होने से 'अम्' आदेश नहीं होगा।

921. झयः - 5/4/111 - यह विधिसूत्र है। 'झय' प्रत्याहार है जिसके अन्तर्गत पाँचों वर्गों (क, च, ट, त, प) के प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ वर्ण आते हैं। इनसे अन्त होनेवाले अव्ययीभाव के पदों से 'टच्' (अ) प्रत्यय होता है।
यथा - उपसमिधम्, उपसमित्।
लौ० वि - समिधः समीपम्, अ० वि० - समिध् + ङस् + उप। ('झयः' से समासान्त 'टच्' प्रत्यय होगा)
शेष 'उपशरदम्' की तरह।
वैकल्पिक पक्ष में 'उपसमित्' रूप होगा।

Uma Patel, Deptt of Skt
B.A I St Yr.